P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-2* October- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन

रेखा सालवी
शोधछात्रा,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में आदिवासी व गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया हैं। इस हेतु शोधार्थी ने उदयपुर शहर के कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें 60 तो आदिवासी व 60 गैर आदिवासी विद्यार्थियों को चयनित किया गया। इस शोध प्रदत्तों के संकलन हेतु रेखा सालवी ने मानकीकृत उपकरण जो कि बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित परीक्षण है, जिसे प्रयोग किया। सांख्यिकी विश्लेषण हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में आदिवासी व गैर आदिवासी विद्यार्थियों में सृजनात्मकता में काफी अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द : आदिवासी, गैर आदिवासी, सर्जनात्मकता

प्रस्तावना

सजृनात्मकता व्यक्ति का ऐसा गुण होता है जिसमें परम्परागत पद्धतियों से अलग हटकर नवीनता एवं मौलिकता का समावेश होता हैं। कोई कार्य इस प्रकार से सम्पादित किया जाए कि उस कार्य को किसी और ने न किया हो तब वह कार्य सजृनात्मकता माना जाता हैं। जैसे मानव का चॉद पर रखा पहल कदम, नये–नये आविष्कार, इन्टरनेट कम्प्यूटर दूरभाष के आधुनिकतम साधन, कृषि, विज्ञान व वाणिज्य में प्रगति आदि सर्जनात्मकता की ही देन हैं। यद्यपि व्यापक तौर पर सर्जनात्मकता में ही मौलिकता के अतिरिक्त अन्य घटक भी शामिल होते हैं जैसा गिलफोर्ड ने लिखा है ''सर्जनात्मकता बालक में न केवल मौलिकता अपितु नम्यता, प्रवाहिता और प्रेरणात्मक स्वभाव के गुण भी शामिल होते हैं।''

वस्तुतः सृजनात्मकता जीवन की सृजनात्मकता अभिव्यक्ति है। सृजनात्मकता से आशय मनुष्य की उस क्षमता से है जो कुछ नया व मौलिक कार्य करने हेतु प्रेरित करती हैं।

प्रत्येक प्राणी में अपने प्रजातीय गुणों के अनुसार सृजनशीलता होती हैं। किन्तु मनुष्य में अपनी उच्च मानसिक योग्यताओं के कारण सृजनशीलता अपेक्षाकृत अधिक होती हैं। कुछ व्यक्ति अधिक सृजनशील होते है तथा कुछ कम।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ''सृजनात्मक'' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, सम्मोहन व चिन्ताकर्षक प्रकरण हैं, क्योंकि मानव समाज के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित व परिवर्तित करने वाले आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी आदि विविध क्षेत्रों के विभिन्न आयामों में द्रुतगति से हुई प्रगति वस्तुतः व्यक्ति विशेष की ''सृजनात्मक योग्यता'' पर ही आधारित हैं। मानव में सृजनात्मकता शक्ति होती है जिसके कारण समाज के विकास में सहायता मिलती है। बहुत से मानसिक क्रियाकलाप सृजनात्मकता पर आधारित हैं। जब कवि कोई अच्छी कविता लिखता है या चित्रकार अपने भावों को कलाकृति के द्वारा प्रकट करता हैं अथवा कोई इंजीनियर नई मशीन बनाता है तब वह अपनी सृजनात्मक शक्ति का उपयोग करते हैं। परिवर्तन मानव जीवन का स्वभाव रहा हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मकता अध्ययन करना।
2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के आदिवासी व गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलानात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं

1. समग्र आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अतंर नहीं है।

2. समग्र ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के आदिवासी व गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अतंर नहीं हैं।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा विदेशों में हुए शोध व भारत में हुए शोध कार्यो का अध्ययन किया गया जैसे सिम्पसन एवं नेन्सी डे (1999) : ''प्रतिभाशाली छात्रों की सर्जनात्मकता प्रेरणा एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन'' प्रतिभाशाली छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का सर्जनात्मकता से सीधा सम्बन्ध होता है। जेम्स एनीज (2001): ''सर्जनात्मकता विचार पर सामाजिक सांस्कृतिक अन्तर के प्रभाव का अध्ययन।''

निष्कर्ष अनुसूचित जनजाति के छात्रों की सृजनात्मकता विचारधारा सवर्णो की तुलना में कम होती हैं। इसी प्रकार से भारत के शोध में नारिया, सरिता (2005): राजस्थान के उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर तनाव एवं दुश्चिता का अध्ययन।'' में पाया गया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में अधिक सर्जनात्मकता पायी जाती हैं। शर्मा, श्वेता (2006): मूक बधिर बालकों की सर्जनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन।'' निष्कर्ष में यह पाया गया कि मूक बधिर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि व सर्जनात्मकता में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। इसी प्रकार से सोनी, संगीता (2010): ''उच्च प्राथमिक स्तर पर मूक बधिर तथा सामान्य बालकों की सर्जनात्मकता तथा कलात्मकता का तुलनात्मकता अध्ययन।'' निष्कर्ष में पाया गया कि मूक बधिर बालकों की सर्जनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं हैं इसी प्रकार से पानीगर, कविता (2009): निजी एवं राजकीय माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सर्जनात्मकता का तुलनात्मकता अध्ययन।'' इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि निजी एवं राजकीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सर्जनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया।

शोध विद्यि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा उदयपुर शहर के कुल 120 विद्यार्थियों जो 3 राजकीय व 3 निजी विद्यालयों से लिया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया है जो कि बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित परीक्षण हैं।

सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरणों के माध्यम से संग्रहित किये गये प्रदत्तों का सारणीयन किया गया तत्पश्चात टी–परीक्षण का उपयोग प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना संख्या 1

आदिवासी तथा गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलानात्मक अध्ययन करना।

आदिवासी तथा गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

सारणी संख्या :– 1

क्र. संख्या	क्षैत्र	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	05/01 पर सार्थकता
1	प्रवाहिता आयाम	आदिवासी	52.99	17.50	2.74	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		गैर आदिवासी	56.17	21.49		
2.	लचीलापन आयाम	आदिवासी	31.66	11.28	2.72	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		गैर आदिवासी	34.40	13.57		
3.	मौलिकता आयाम	आदिवासी	18.87	6.2	3.94	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		गैर आदिवासी	21.98	5.1		

सारणी संख्या 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि क्षेत्र प्रवाहिता आयाम में गैर आदिवासी विद्यार्थियों के प्राप्ताकों का मध्यमान 56.17 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता सूची में प्रथम स्थान पर हैं। अर्थात गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया हैं। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना संख्या : 2

ग्रामीण व शहरी क्षैत्र के आदिवासी व गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।

सारणी संख्या :– 2

क्र. संख्या	क्षैत्र	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	.05/.01 पर सार्थकता
1	प्रवाहिता आयाम	ग्रामीण	43.61	10.55	2.15	0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		शहरी	54.99	13.61		
2.	लचीलापन आयाम	ग्रामीण	32.84	8.47	2.76	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		शहरी	36.73	9.19		
3.	मौलिकता आयाम	ग्रामीण	15.48	4.58	3.85	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		शहरी	37.46	10.58		

सारणी संख्या 2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि क्षेत्र प्रवाहिता आयाम में शहरी क्षेत्र के गैर आदिवासी विद्यार्थियों का मध्यमान 54.99 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता सूची में अधिकतम अर्थात ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के आदिवासी व गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने यह पाया कि आदिवासी व गैर आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थियों में सृजनात्मक में काफी अन्तर पाया गया अतः ग्रामीण क्षेत्र के आदिवासी की सृजनात्मक को बढ़ावा देने के लिए वहां के शिक्षकों व अभिभावकों का प्रयास करने की आवश्यकता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गुप्ता, एस.पी. (2007): ''सांख्यिकी विधियाँ'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
2. *सरीन व सरीन (2008): ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।*
3. *सुखिया, एस.पी. एवं मेहरोगा, पी.बी. (1984): ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।*
4. *कपिल, एच.के. ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।*
5. *पाठक, पी.डी. (2008): ''षिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।*
6. *बुच, एम.बी. (1983–1988): ''फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', एन.सी.आर.टी. नई दिल्ली, वोल्यूम 1,2।*
7. *बुच, एम.बी. (1988–1992): ''फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', एन.सी.आर.टी. नई दिल्ली, वोल्यूम 1,2।*
8. *भारतीय आधुनिक शिक्षा (जुलाई, 1988) पृ.संख्या 29–34।*
9. *वर्मा, प्रीती एवं श्रीवास्तवः डी.एन. (1991): ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।*
10. *शर्मा, आर.ए. (2009): ''शिक्षण अधिगम'', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ–2500।*